संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता

प्रा.डॉ.शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन
हिंदी विभाग,
कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
बदनापुर, जि. जालना

कबीर पंद्रहवी शताब्दी के संत दो, भक्तिकाल के कवियों में वह प्रमुख रहस्यवादी कवि थे, उनके दोहे सुनने वाले लिख लेते थे या कंठस्थ कर लेते थे क्योंकि कबीर अनपढ थे, पर ज्ञान का भंडार थे। उन्होंने खुद कहा कि-

मसि कागज कहयो नही, कलम नहीं छुओ हाथ।

सिख धर्म पर उनका प्रभाव स्पष्ट झलकता है। उनका पालन पोषण एक मुस्लिम जुलाहा परिवार में हुआ था पर उन्होने अपना गुरू रामानंद को माना। जन्मस्थान के बारे में विद्वारों में मतभेद है परन्तु अधिकतर विद्वान इनका जन्म काशी मे ही मानते है, जिसकी पुष्टि स्वयं कबीर का यह कथन भी करता है-

काशी मे परगट भये रामानंद चेतायेछ
हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना,
आपस मे थेउ लडी-लडी मुए, मरम न काउ जाना।

आज जब पुरे विश्व में धर्म के नाम पर आतंकवाद फैला हुआ तब कबीर के दोहों को याद करना उन्हे जीवन में उतारना बहुत प्रासंगिक लगता है। वे एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकांडो के घोर विरोधी थे । अवतार, मूर्तिपूजा, रोजा, ईद, मस्जिद, मंदिर आदि को वे नही मानते थे । कबीर के समय में हिंदू जनता पर धर्मातंरण का दबाव था उन्होंने अपने दोहो में दोनो धर्म के कर्मकांडो का विरोध किया और ईश्वर केवल एक है इस बात को तरह तरह से लोगों को सहज भाषा में समझाया । उन्होने ज्ञान से ज्यादा महत्व प्रेम को दिया ।

पोथी पढि पढि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढे सो पंडित होय ।

निम्नलिखित दोनो दोहो मे कबीर ने हिन्दू और इस्लाम दोनो धर्मोके खोखलेपन को बताया हैं। मूर्ति पूजा को निरर्थक मानते हुए वो कहते है कि इससे अच्छी तो चक्की है, कि कुछ काम तो आती है। मुल्ला के

बांग लगाने का भी वह उपहास करते है। ये दोहे आज इसीलिये बहुत प्रासंगिक हो गये है क्योंकि आज धर्मो मे दिखावा बढता जा रहा है, एक दूसरे को नीचा दिखाने की होड सी लगी हुई है-

पाहन पूजे हरि मिलें, तो मैं पूजौं पहार ।

वाते तो चाकी भली, पीसी खाय संसार ।

उनके वक्तव्य का मकसद किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं था। इसलिए कबीर ने कहा था कि बहुत सोच समझ कर मुंह से बात निकालनी चाहिये।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान,

मोल करो तरवार का, पड़ा रहने दो म्यान।

कबीर जाति प्रथा को नहीं स्विकार करते थे उपर्युक्त दोहे में उन्होंने स्पष्ट किया है कि साधु यानि गुणी लोगोकी जाति नहीं पूँछनी चाहिये उनके केवल गुण देखने चाहिये। आज जातिवाद का जो जहर समाज मे फैला है, कभी किसी जाति को आरक्षण चाहिये कभी किसी को, उनको कबीर का ये दोहा करारा जवाब है।

जीवन मे संतुलन का महत्व समझाते हुए कबीर कहते हैं, अधिकता किसी भी चीज की सही नही है।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप,

अति का भला न बरतना, अति की भली न धूप।

किसी का ओहदे या आकर मे चेटा बडा होना महत्वपूर्ण नहीं है महत्वपूर्ण उसकी उपयोगिता है। निम्नलिखित दोनो दोहे यही प्रमाणित करते है –

बडा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड खजूर,

पंची को चया नही फल लगे अति दूर।

तिनका कबहुँ ना निन्दिये, जो पॉवन तर होय,

कबहुँ उडी आँखिन पडे, तो पीर घनेरी होय ।

आजकल धन दौलत ऐशो आराम के साधनो की दौड़ मे व्यक्ति सही गलत का अंतर भूल चुका है इसलिये भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती तथा दूसरे अपराध बढ रहे है। कबीर धन का महत्व मानते है पर बस इतना सा-

साई इतना दीजिये, जा में कुटुम समाय,

मैं भी भूखा ना रहूँ, साधू ना भूखा जायच

लालच का अंत ऐसा भी होता है –

मक्खी गुड में गडी रहे, पंख रहे लिपटाये,

हाथ मले और सिर ढूंढे, लालच बुरी बलाये।

संतोष का अर्थ समझाने के लिये वो लिखते है –

चाह मिटी, चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह,

जिसको कुछ नहीं चाहिए वह शहनशाह ।

महत्वाकाँक्षी होना गलत नहीं है पर उसके लिये एक अंधी दौड मे लगाकर अपना सुख चैन गंवाना सही नहीं है क्यों कि सब काम अपने समय से ही होते है। आज का व्यक्ति सब कुछ बहुत जल्दी पाना चाहता है पर सब काम अपने समय पर ही होते हैं-

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय,

माली सीचे सौ घडा, ऋतु आए फल होय ।

कबीर के राम तो अगम है और संसार के कण-कण में विराजते है। कबीर के राम इस्लाम के एकेश्वरवादी, एकसत्तावादी खुदा भी नही है। इस्लाम में खुदा या अल्लाह को समस्त जगत एव जीवों से भिन्न एवं परम समर्थ माना जाता है। पर कबीर के राम परम समर्थ भले हो, लेकिन समस्त जीवो और जगत से भिन्न तो कदापि नहीं है। बल्कि इसके विपरीत वे तो सबसे व्याप्त रहने वाले घरमता रामडहै। वह कहते है, कबीर की दृढ मान्यता थी कि कर्मों के अनुसार ही गति मिलती हे स्थान विशेष के कारण नही। अपनी इस मान्यता को सिद्ध करने के लिए अंत समय में वह मगहर चले गए, क्योंकि लोगो मान्यता थी कि काशी में करने पर स्वर्ग और मगहर में मरने पर नरक मिलता है ।

कबीर की बाते आज उतनीही प्रांसगिक है जितनी उनके समय मे थी। आजकल धार्मिक कर्मकाँडो को बहुत ही विकृत रूप समाज मे दिख रहा है। राजनैतिक लाभ के लिये धार्मिक भावनाओं उकसाया जाता है। ऐसे मे कबीर को पढना समझना और जीवन मे उतारना सांप्रथयिक सद्भाव बनाये रखने मे मदद कर समता है।

संदर्भ संकेत

१. हिंदी साहित्ययुग और प्रवृत्तियाँ-डॉ.शिवकुमार शर्मा
२. गुरुगोविंद सिंघ और हिंदी सन्त परंपरा-डॉ.प्रतिभा गणेश भुसारी
३. कबीर-डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी
४. काव्यांजलि-डॉ.जमादार ए.एच.